

भालू ने खेली फुटबाल
अभ्यास प्रथम दिन

जाड़े की ऋतु थी। सुबह का वक्त। चारों ओर कोहरा ही कोहरा। शेर का एक बच्चा

सिमटकर गोलमटोल दना जामुन के वृक्ष के नीचे सोया हुआ था। इधर भालू साहब सैर

पर निकले। तभी उनकी नजर जामुन के वृक्ष के नीचे पड़ी। आंखें फैलाई, अकल दौड़ाई-

अहा, फुटबाल। सोचा चलो इससे खेलकर सर्दी की ऋतु में कुछ गर्मी हासिल की जाए।

आव देखा न ताव, भालू जी ने शेर के बच्चे को पैर से उछाल दिया। हडबडी में शेर का

बच्चा दहाड़ा। उसने वृक्ष की डाल पकड़नी चाही। मगर वह डाल पकड़ नहीं पाया।

भालू साहब जल्दी ही मामला समझ गए। वे पछताए। अगले ही क्षण दौड़कर उन्होंने

अपने दोनों हाथ बढ़ाए। शेर के बच्चे को लपक लिया। मुझे और उछालो।

अभ्यास द्वितीय दिन

अरे यह क्या । शेर का बच्चा फिर से उछालने के लिए कह रहा है। एक बार फिर भालू

दादा ने उछाला। दो बार, तीन बार। फिर क्या था बार-बार यही होने लगा। शेर के बच्चे

को उछलने में मजा आ रहा था, परंतु भालू थककर परेशान हो गया था। ओह किस

आफत में आ फंसा। इस बार उछालते ही भालू ने घर की ओर दौड़ लगायी और गायब

हो गया। इधर शेर का बच्चा धड़ाम से जमीन पर आ गया और डाल भी टूट गई। तभी

माली वहां आ गया वह शेर के बच्चे पर बरस पड़ा। तुमने पेड़ की डाल तोड़ दी।

हरजाना लाओ। शेर के बच्चे ने कहा। क्षमा करों। जरा ठीक तो हो लूं। माली ने कहा

हमने पेड़ तोड़ दिया है। शेर के बच्चे ने कहा। क्षमा करों। जरा ठीक तो हो लूं। माली ने कहा

[illegible]

$\angle 1$ को 92° में बढ़ा दिया है। $\angle 2$ को 15° में बढ़ा दिया है।

अभ्यास तृतीय दिन

$\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} \times \frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{16}$

3- اے اے مہر و قہر کے لئے جو شاہناہ پہلے پہل اے

የጊዜ ምዕራፍ ስራ ስለሚፈጸም ነው፡፡

[illegible][illegible]

ग/ १० अरु स/ ५० च/ १५ व/ १० अ/ ५०

$$-c / \sqrt{5} : c - b | \sqrt{2} c - \sqrt{7}$$

ታሪክ ስለሚገልጽ ስለሚታወቅ ስለሚታወቅ ስለሚታወቅ ስለሚታወቅ

$\gamma_3, \sqrt{2}, \frac{1}{\sqrt{2}}, \frac{1}{\sqrt{2}}$

[illegible]

- مکتبہ نورا، قرہ قلیہ، کراچی - ۱

અવનિ સૂડ સે વગેરે વગેરે હોવા બાબતે નોંધ લેવામાં આવેલ છે.

रक्षा हो गई। "हलो, नन्हें भँवरे!" हाथी बोला। "हलो, नन्हें हाथी!" भँवरा बोला। दोनों

खुश हो गए। दोनों पक्के मित्र बन गए।

अभ्यास चौथे दिन

$\frac{1}{2} \cdot \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$

५' गे डल १० ॥ २० ६३ १-४३ ८

ନାମ ପଦା ହ : ଶାବୁ ପାଳା ଓ ଖିର
 ଖାଦ୍ୟ ଓ ପାନୀୟ ପଦାର୍ଥ

بہ اے حضرت - قلم و آواز الی - پ - ج

• ୧୫ ଜୁଲାଇ ୧୯୫୫ - ୧୫ ଅଗଷ୍ଟ ୧୯୫୫

$\beta_1 \rightarrow f$

[illegible]

نہا لغا اگ لے ط لے - قاعا ط لے لے -

05-10-2023

[illegible]

የጋራ ልማት ሚኒስቴር

अभ्यास पांचवें दिन

आगे रास्ते में एक बहेलिए ने चिड़ियों को पकड़ने के लिए जाल बिछा रखा था। उसे "उड़
 उड़ो" कहकर बुलाया करता था।

चिड़ी" सुनकर बड़ा गुस्सा आया। बहेलिया गुस्से में बोला, मैं तो चिड़ियों को पकड़ रहा हूँ।

और यह कहता है उड़ चिड़ी। ठहर जा, अभी बताता हूँ। वह भी बिरजू के पीछे दौड़ा।

बिरजू घबराकर बोला, "फिर मैं क्या बोलू?" बहेलिया बोला, "बोल बैठ चिड़ी।" अब बिरजू

“बैठचिड़ी-बैठचिड़ी” बोलता हुआ जा रहा था। चलते-चलते उसे भूख लगने लगी। बिरजू

एक होटल में गया और बोला, "मैं बैठचिड़ी खाऊँगा।" होटल में किसी को समझ नहीं

आया कि बिरजू क्या माँग रहा है। मगर बिरजू "बैठचिड़ी-बैठचिड़ी" की रट लगाए था।

21. मे. 29/10 मे. 5-2, 1/1-1

होटल वालों को गुस्सा आ गया। उन्होंने बिरजू की जमकर पिटाई कर दी। इतने में

हॉटेल वाला को भुरसा जल पानी पिलाया

विरजू की माँ वहाँ आ पहुँची। माँ बोली, "अरे तुमने तो पीट-पीटकर मेरे बेटे की खिचड़ी

१०/०५/२०१७

ही बना दी।" "खिचड़ी" सुनकर बिरजू खुश हो गया। बोला, 'हाँ-हाँ, मैं खिचड़ी ही तो

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

खाना चाहता हूँ।”

١٢

बगीचे का घोंघाअभ्यास छठे दिन

बहुत समय पहले की बात है। एक बगीचे में एक घोंघा रहता था। जानते हो घोंघा

बहुत छोटा और सुन्दर था। घोंघे ने अपनी सारी जिन्दगी उसी

बगीचे में बिताई। वह धीमे-धीमे चलता था, उसे बगीचे के एक छोर से दूसरे छोर तक

पहुँचने में पूरे दो दिन लगते थे। बहुत समय तक वहाँ रहने की वजह से घोंघा बगीचे का

कोना-कोना पहचान गया था। पर कभी-कभी घोंघे को लगता, इस बगीचे के बाहर क्या

होगा? कैसी होती होगी दुनिया? बगीचे की दीवार में एक छेद था। घोंघा रोज उस छेद

को देखता। उसे याद आता कि उसकी माँ उससे कहा करती थी, "अगर तुमने ज्यादा

बदमाशी की तो मैं तुम्हें इस छेद से बाहर की दुनिया में भेज दूँगी।" घोंघा कुछ और दिन

सोचता रहा। फिर उसने अपना सामान अपने शंख में बाँध लिया। अगले दिन सूरज

निकलने के पहले ही घोंघा निकल पड़ा। घोंघा छेद में घुसा और जल्दी ही बाहर निकल

आया। बाहर आते ही घोंघा चकित रह गया। जितनी दूर तक उसकी आँखें देख सकती

थी, वह देखती थी। वह देखती थी कि बाहर की दुनिया बड़ी बड़ी थी।

$$1 \rightarrow \text{...} \rightarrow \text{...} \rightarrow \text{...} \rightarrow \text{...}$$

उ-१-९

सचमुच कितनी बड़ी है, घाघ न कहा। उसी समय दो-दो निशाने

३--१। २। ३। ४। ५। ६। ७। ८। ९। १०। ११। १२। १३। १४। १५। १६। १७। १८। १९। २०। २१। २२। २३। २४। २५। २६। २७। २८। २९। ३०। ३१। ३२। ३३। ३४। ३५। ३६। ३७। ३८। ३९। ४०। ४१। ४२। ४३। ४४। ४५। ४६। ४७। ४८। ४९। ५०। ५१। ५२। ५३। ५४। ५५। ५६। ५७। ५८। ५९। ६०। ६१। ६२। ६३। ६४। ६५। ६६। ६७। ६८। ६९। ७०। ७१। ७२। ७३। ७४। ७५। ७६। ७७। ७८। ७९। ८०। ८१। ८२। ८३। ८४। ८५। ८६। ८७। ८८। ८९। ९०। ९१। ९२। ९३। ९४। ९५। ९६। ९७। ९८। ९९। १००।

31. 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 101 102 103 104 105 106 107 108 109 110 111 112 113 114 115 116 117 118 119 120 121 122 123 124 125 126 127 128 129 130 131 132 133 134 135 136 137 138 139 140 141 142 143 144 145 146 147 148 149 150 151 152 153 154 155 156 157 158 159 160 161 162 163 164 165 166 167 168 169 170 171 172 173 174 175 176 177 178 179 180 181 182 183 184 185 186 187 188 189 190 191 192 193 194 195 196 197 198 199 200 201 202 203 204 205 206 207 208 209 210 211 212 213 214 215 216 217 218 219 220 221 222 223 224 225 226 227 228 229 230 231 232 233 234 235 236 237 238 239 240 241 242 243 244 245 246 247 248 249 250 251 252 253 254 255 256 257 258 259 260 261 262 263 264 265 266 267 268 269 270 271 272 273 274 275 276 277 278 279 280 281 282 283 284 285 286 287 288 289 290 291 292 293 294 295 296 297 298 299 300 301 302 303 304 305 306 307 308 309 310 311 312 313 314 315 316 317 318 319 320 321 322 323 324 325 326 327 328 329 330 331 332 333 334 335 336 337 338 339 340 341 342 343 344 345 346 347 348 349 350 351 352 353 354 355 356 357 358 359 360 361 362 363 364 365 366 367 368 369 370 371 372 373 374 375 376 377 378 379 380 381 382 383 384 385 386 387 388 389 390 391 392 393 394 395 396 397 398 399 400 401 402 403 404 405 406 407 408 409 410 411 412 413 414 415 416 417 418 419 420 421 422 423 424 425 426 427 428 429 430 431 432 433 434 435 436 437 438 439 440 441 442 443 444 445 446 447 448 449 450 451 452 453 454 455 456 457 458 459 460 461 462 463 464 465 466 467 468 469 470 471 472 473 474 475 476 477 478 479 480 481 482 483 484 485 486 487 488 489 490 491 492 493 494 495 496 497 498 499 500 501 502 503 504 505 506 507 508 509 510 511 512 513 514 515 516 517 518 519 520 521 522 523 524 525 526 527 528 529 530 531 532 533 534 535 536 537 538 539 540 541 542 543 544 545 546 547 548 549 550 551 552 553 554 555 556 557 558 559 560 561 562 563 564 565 566 567 568 569 570 571 572 573 574 575 576 577 578 579 580 581 582 583 584 585 586 587 588 589 590 591 592 593 594 595 596 597 598 599 600 601 602 603 604 605 606 607 608 609 610 611 612 613 614 615 616 617 618 619 620 621 622 623 624 625 626 627 628 629 630 631 632 633 634 635 636 637 638 639 640 641 642 643 644 645 646 647 648 649 650 651 652 653 654 655 656 657 658 659 660 661 662 663 664 665 666 667 668 669 670 671 672 673 674 675 676 677 678 679 680 681 682 683 684 685 686 687 688 689 690 691 692 693 694 695 696 697 698 699 700 701 702 703 704 705 706 707 708 709 710 711 712 713 714 715 716 717 718 719 720 721 722 723 724 725 726 727 728 729 730 731 732 733 734 735 736 737 738 739 740 741 742 743 744 745 746 747 748 749 750 751 752 753 754 755 756 757 758 759 760 761 762 763 764 765 766 767 768 769 770 771 772 773 774 775 776 777 778 779 780 781 782 783 784 785 786 787 788 789 790 791 792 793 794 795 796 797 798 799 800 801 802 803 804 805 806 807 808 809 810 811 812 813 814 815 816 817 818 819 820 821 822 823 824 825 826 827 828 829 830 831 832 833 834 835 836 837 838 839 840 841 842 843 844 845 846 847 848 849 850 851 852 853 854 855 856 857 858 859 860 861 862 863 864 865 866 867 868 869 870 871 872 873 874 875 876 877 878 879 880 881 882 883 884 885 886 887 888 889 890 891 892 893 894 895 896 897 898 899 900 901 902 903 904 905 906 907 908 909 910 911 912 913 914 915 916 917 918 919 920 921 922 923 924 925 926 927 928 929 930 931 932 933 934 935 936 937 938 939 940 941 942 943 944 945 946 947 948 949 950 951 952 953 954 955 956 957 958 959 960 961 962 963 964 965 966 967 968 969 970 971 972 973 974 975 976 977 978 979 980 981 982 983 984 985 986 987 988 989 990 991 992 993 994 995 996 997 998 999 1000 1001 1002 1003 1004 1005 1006 1007 1008 1009 1010 1011 1012 1013 1014 1015 1016 1017 1018 1019 1020 1021 1022 1023 1024 1025 1026 1027 1028 1029 1030 1031 1032 1033 1034 1035 1036 1037 1038 1039 1040 1041 1042 1043

2- $\sqrt{3} \times 1 = 1.732$ $\sqrt{1} = 1$ $\sqrt{4} = 2$ $\sqrt{9} = 3$ $\sqrt{16} = 4$ $\sqrt{25} = 5$ $\sqrt{36} = 6$ $\sqrt{49} = 7$ $\sqrt{64} = 8$ $\sqrt{81} = 9$ $\sqrt{100} = 10$

ਦਾ ਨਾਂ - ਕੁਮਾਰ (3-2)

अभ्यास सातवें दिन

उसी समय खड़-खड़ की आवाज आई। घोंघे को लगा कि पूरा आकाश ढक गया है। वह

डर के मारे जोर से चिल्लाया उई। फिर वह अपने उपर हंसने लगा। उसने देखा कि एक

सूखा पत्ता उसके उपर आ गिरा था। वाह, दुनिया तो कितनी मजेदार जगह है, घोंघे ने

कहा। वह उस सूखी भूरी पत्ती के नीचे से बाहर निकल गया। थोड़ा आगे एक बड़ा-सा

पत्थर पड़ा हुआ था। घोंघे को लगा यह जरूर कोई पहाड़ होगा। वह झट से उस पर

चढ़ गया और दुनिया के नजारे देखने लगा। घोंघे ने अपनी जिन्दगी में पहली बार लाल

चींटो को देखा। वे लम्बे-पतले पॉवों से तेजी से इधर-उधर आ-जा रहे थे। उसने देखा

कि एक गिलहरी फुदक-फुदककर तेजी से एक पेड़ पर चढ़ गई। एक गेंद लुढ़कती हुई

जा रही है और एक कुत्ता तेजी से उसके पीछे भाग रहा है। "वाह, दुनिया में सब कुछ

कितने तेजी से चलता है" घोंघे ने कहा। "बगीचे में तो सब कुछ धीरे-धीरे चलता था,

मेरी तरह।" तभी अचानक उसने एक ऐसी चीज देखी जिससे उसका सिर चकरा गया।

अभी तक तो घोंघे ने पौधे या छोटे पेड़ ही देखे थे। पर यहाँ पर तो एक ऐसा लंबा पेड़

था जो पूरे आसमान तक जाता था। बेचारे घोंघे ने कभी खजूर का पेड़ नहीं देखा था।

वहाँ एक और पेड़ था जो इतना बड़ा था कि घोंघा उसके एक छोर से दूसरे छोर तक भी

४। / ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

नहीं देख पाता था। बड़ के पेड़ से जो उसका पाला पड़ गया था, इसलिए। घोंघे की

२ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

आँखें आश्चर्य से और भी खुल गई। फिर थोड़ी और, और भी चौड़ी हो गई। "वाह,

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

सचमुच दुनिया कितनी अद्भुत जगह है।" घोंघे ने तय कर लिया कि अब तो वह इस

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

दुनिया में ही रहेगा।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

खीरा खाऊँ कचर-कचर

अभ्यास आठवें दिन

भाजी का बड़ा खेत था। खेत में खूब बेलें थी। कदवू थे। ककड़ियाँ थीं। खीरे तो बहुत ही

थे। वहाँ उड़ता आया एक कौआ। उसने सोचा, "अहा, कितने अच्छे हैं ये खीरे। चलो

खाऊँ में इनको कचर-कचर।" कौआ गया बेल के पास। जैसे ही उसने खीरे में चोंच

मारी। बेल बोली—"ठहर जा भाई। तेरी चोंच तो गंदी है। पहले पानी से अच्छी तरह धो

ले। फिर खाना कचर-कचर।" कौआ गया बावड़ी के पास। बावड़ी दीदी, बावड़ी दीदी।

आँगन में आया है कौआ भाई। दे थोड़ा पानी, धो लूँ जरा चोंच, खीरा खाऊँगा

कचर-कचर। बावड़ी बोली—ले भाई पानी, पर तू लेगा किसमें? एक मटका ले आ, फिर

चाहे जितना पानी भर लेना। कौआ उड़ता-उड़ता गया कुम्हार के पास। बोला— "कुम्हार

महाराज, कुम्हार महाराज! आँगन में आया है कौआ भाई। दे जरा मटका। निकालूँ थोड़ा

पानी। धो लूँ अपनी चोंच। खीरा खाना है कचर-कचर।" कुम्हार बोला— "मिट्टी ला।

अभी बना देता हूँ मटका।"

मिट्टी ला

दादी की रोटीअभ्यास नौवें दिन

एक बार एक दादी ने एक रोटी बनाई और उसे पीतल की थाली में रखा। एक कौआ

आया और उसे लेकर उड़ गया, फिर पेड़ पर अपने घोंसले में जा बैठा। दादी बोली,

“कौए, ओ कौए, मेरी रोटी वापस कर दे।”

कौए ने उत्तर दिया, “क्यों दूँ? मैं तो इसे खाऊँगा।”

दादी पेड़ के पास गई और उससे बोली, “ओ पेड़, ओ पेड़, मैं बहुत भूखी हूँ और कौआ

मेरी रोटी ले गया है। तुम उसका घोंसला नीचे गिरा दो, तो मैं अपनी रोटी उससे वापस

ले लूँ।” पेड़ मोटी आवाज में बोला, “नहीं, दादी! कौआ तो मेरा दोस्त है। मैं

क्यों उसका घोंसला नीचे गिराऊँ?” दादी लकड़हारे के पास पहुँची। “आ लकड़हारे, कौआ

मेरी रोटी ले गया है। पेड़ उसका घोंसला नीचे नहीं गिराता, इसलिए तुम पेड़ को काट

डालो।” लकड़हारे ने धीरे से पूछा, “मैं क्यों काटूँ पेड़? उसने तो मेरा कोई नुकसान नहीं

किया है।” दादी गुस्सा हो गई और चूहे के पास पहुँची। “ओ चूहे, ओ चूहे, तुम मेरे दोस्त

हो।” दादी गुस्सा हो गई और चूहे के पास पहुँची। “ओ चूहे, ओ चूहे, तुम मेरे दोस्त

बन जाओ। काओ मरो शेटो ले गवा ह, पडे उरवने दोराला तबे ह।

पेड़ नहीं काटता है। तुम उसकी कुल्हाड़ी की मूठ काट दो।" चूहे ने कुछ देर सोचा फिर

बोला, "लकड़हारे ने तो मेरा कुछ नहीं बिगाड़ा है। मैं क्यों काटूँ उसकी कुल्हाड़ी की

6

अभ्यास दसवें दिन

दादी चलती-चलती बिल्ली के पास पहुँची। "ओ बिल्ली, कौआ मेरी रोटी ले गया है। पेड़

उसका घोंसला नीचे नहीं गिराता, लकड़हारा पेड़ नहीं काटता, चूहा लकड़हारे की

कुल्हाड़ी की मूठ नहीं काटता। मेरी बिल्ली, तुम चूहे को मार डालो।" बिल्ली बोली,

"दादी, तुम्हारी शिकायत ठीक होगी, पर चूहे ने तो मुझे कभी तंग नहीं किया। मैं क्यों उसे

मारूँ?" दादी थककर अपने कुत्ते के पास गई। उसने उसे प्यार से थपथपाया और कहा,

"मेरे कुत्ते, मेरे दोस्त, क्या तुम भी बिल्ली को नहीं मारोगे?" कुत्ते ने अपनी दुम हिलाई

और कहा, "क्यों नहीं! जरूर मारूँगा।" कुत्ता बिल्ली के पीछे भागा। बिल्ली चिल्लाई, "मुझे

छोड़ दो भाई।" वह चूहे के पीछे भागी। चूहा चिल्लाया, "बिल्ली, बिल्ली, मुझे मत मारो, मैं

अभी जाकर लकड़हारे की कुल्हाड़ी की मूठ काटता हूँ।" लकड़हारे ने देखा कि चूहा आ

रहा है। उसने विनती की, "भाई मेरी कुल्हाड़ी की मूठ मत काटो। मैं अभी जाकर पेड़

काटता हूँ।" उसने अपनी कुल्हाड़ी उठाई और पेड़ काटने चल दिया। पेड़ बोला,

"लकड़हारे भाई, मुझे मत काटो, मैं अभी कौए का घोंसला नीचे गिराता हूँ।" पेड़ ने अपनी

डाल हिलाई, डाल ने घोंसला हिलाया, कौआ डर गया और उसने झट से रोटी नीचे फेंक

Handwritten signature: *Handwritten signature*

दी। दादी को रोटी मिल गई और वह खुशी-खुशी अपने घर चली गई।

२१ अ-७ प्र श्रुत / र ५ - २ २-२ २-३

सूरज का रुमाल

अभ्यास ग्यारहवें दिन

एक बार सूरज को जुकाम हो गया। हुआ यूँ कि एक दिन बारिश हो रही थी और सूरज

बिना गमबूट पहने ही बाहर निकल पड़ा। पानी भरे गड्ढों में वह छप-छप करता चलता

गया जिससे उसके पैर काफी भीग गए। वापस लौट आने के बजाय वह आगे बढ़ता ही

गया। थोड़ी ही देर में उसके कपड़े भी भीग गए और फिर भी वह नहीं लौटा। वह तो

आगे-ही-आगे झरनों और पहाड़ियों पर से उछलता-कूदता हरे-भरे मैदानों को पार करता

चला गया। धरती ने उसे गरम पानी की बोतल दी और रजाई ओढ़ाकर बिस्तर में सुला

दिया। इसका कोई फायदा नहीं हुआ। वह सपने में भी छींकता ही रहा। जब इन सबसे

भी आराम नहीं आया तो धरती ने अपनी बहन फूलरासी को बुलाया। फूलरासी ने गुलाब,

सूरजमुखी के फूल, बटन फूल, नीले घंटी फूल और तरह-तरह के फूलों की मुस्कान ली।

उसमें तुलसी और जड़ी-बूटी मिलाकर दवा बनाई। दवा सूरज को गरम-गरम पिला दी।

10

अभ्यास बारहवें दिन

फूलरानी ने सूरज के लिए एक रुमाल बनाया। उसमें फूलरानी ने नींद में सिर डुलाते

बैंगनी रंग के बनफशा के फूलों की सुन्दरता डाली। आसमान के नीले रंग से हल्का नीला

रंग गुनगुनाते झरनों के किनारे उगी लम्बी घास का हरा रंग, बॉस और मधुमक्खी का

पीला रंग, सागर पर छिटका सूर्यास्त का नारंगी रंग और गरमियों में जंगलों में फलने

वाले बेरों का लाल रंग मिलाया। ये सतरंगी रुमाल फूलरानी ने सूरज को दे दिया। जल्दी

ही सूरज का जुकाम ठीक होने लगा और सुबह सूरज फूलरानी का दिया सतरंगी रुमाल

लेकर बाहर आया, शायद जरूरत पड़ जाए। रोशनी में रुमाल चमकने लगा। एक नन्हीं

लड़की जो लगातार बारिश से ऊब गई थी बोली, "यह तो इन्द्रधनुष है, जिसने बरखा

रानी को बाँध रखा है।" मगर हमारे लिए यह तो सूरज का सतरंगी रुमाल है।

समुद्र खारा क्यों

अभ्यास तेरहवें दिन

एक गाँव में दो भाई रहते थे। बड़ा भाई तो अमीर पर छोटा भाई बहुत गरीब था। छोटे

2024.11.15

भाई के परिवार को दोनों समय का खाना भी नसीब नहीं हो पाता था। कुछ दिन बाद

दीवाली आई। लोगों के घरों में जैसे खुशियों की बहार आने लगी थी किन्तु छोटा भाई

दुखी था। उसके पास परिवार को खिलाने के लिए अनाज भी नहीं था। वह अपने बड़े

भाई के पास मदद माँगने गया, लेकिन उसने मदद नहीं की। वह निराश होकर अपने घर

19. 12. 1

बूढ़े ने कहा- "तुम, मेरी मदद करोगे? यह गट्टर उठाकर मेरे घर तक पहुँचा दो तो मैं

भी तुम्हारे कुछ काम आऊँगा।" छोटे ने गट्ठर उठा लिया और बूढ़े के पीछे-पीछे

उसके घर गया। बूढ़े ने बदले में एक मालपुआ दिया और कहा "तुम जंगल की तरफ

जाओ, वहाँ एक चट्टान के पास गुफा है। उस गुफा में तीन बौने रहते हैं वे मालपुओं के

ਮੇਰਾ ਨਾਂ ਹੈ - ਮੁਖੀ ਸਿੰਘ

अभ्यास चौदहवें दिन

छोटे ने उसे मालपुआ दे दिया। बदले में उसने पत्थर की एक चक्की दी और कहा तुम्हें

जो भी चाहिए इससे माँग लेना। जब तुम्हारी इच्छा पूरी हो जाए तब इस चक्की पर लाल

कपड़ा डालकर ढक देना।" छोटा चक्की लेकर घर पहुँचा। उसकी पत्नी और बच्चे भूखे

सो रहे थे। उसने कपड़ा बिछाया, चक्की रखी और कहा—"चक्की-चक्की चावल दे दो।"

चक्की ने चावल का ढेर लगा दिया। छोटे ने चक्की को लाल कपड़े से ढक दिया। तब

चावल आने बन्द हो गए। उसने दुबारा कहा, "चक्की-चक्की दाल दे दो" कहते ही दाल

का ढेर लग गया। उन्होंने जरूरत के अनुसार दाल-चावल बनाए, खाए और आराम से सो

गए। अगले दिन बाकी बचे दाल-चावल वह बाजार में जाकर बेच आया। इस प्रकार

रोज-रोज अनाज बेचकर वह बड़े भाई से भी अधिक धनवान बन गया। बड़े भाई को ईर्ष्या

हुई, उसने पता लगाने की ठानी कि छोटा अचानक अमीर कैसे बन गया? एक दिन जब

छोटा अनाज बेचने शहर गया, तब बड़ा भाई राज मालूम कर, चक्की को उठाकर अपने द

र ले आया। फिर वह अपने परिवार को लेकर रातोंरात समुद्र के रास्ते दूर शहर के लिए

निकल गया। जहाज में बैठी उसकी पत्नी ने कहा, "इस मामूली चक्की के लिए तुमने

अपना घर, सुख-सुविधाएँ सब छोड़ दी।" बड़े भाई ने कहा, "यह कोई मामूली चक्की नहीं

है, अभी तुझे इसका चमत्कार दिखाता हूँ।" उसने चक्की से कहा— "चक्की-चक्की नमक

दे दो।" चक्की ने नमक का ढेर लगा दिया, किन्तु चक्की बन्द करने के लिए लाल कपड़े

का प्रयोग उसे नहीं आता था। नमक निकलता ही गया और ढेर लगता गया। नमक के

भार से जहाज चक्की समेत समुद्र में डूब गया। साथ में बड़ा भाई एवं उसका परिवार भी

डूब गया। कहते हैं कि चक्की अभी भी चल रही है, नमक निकल रहा है इसलिए समुद्र

का पानी खारा है।

“इतने कि मैं गिन भी नहीं सकती,” छुटकी ने पलकें झपकाते हुए कहा। फिर अपना

सिर अपने पंखों में छिपाकर झट-से सो गई। अगली रात छुटकी ने फिर आसमान की

ओर देखा।

“अम्मी, आसमान ऊँचा कित्ता है?”

“बहुत ऊँचा” अम्मी बोली।

“कितना ऊँचा?” छुटकी उल्ली ने फिर पूछा।

“जाकर खुद ही देख लो,” अम्मी ने कहा।

तो फिर ऊपर आसमान की ओर उड़ चली। अपने पेड़ से बहुत ऊपर। बादलों तक जा

पहुँची। उसने अपने पंख जोर से फड़फड़ाए। अब वह बादलों से भी ऊपर उड़ रही थी

लेकिन वह जितना ऊपर जाती, आसमान और ऊपर उठता चला जाता। सुबह जब वह

अपने पेड़ पर उतरी तो बहुत थक चुकी थी। “तो कितना ऊँचा?” “इतना कि मैं उड़कर

वहाँ पहुँच ही नहीं सकती,” उल्ली ने जवाब दिया। फिर उसने अपनी आँखें बन्द की और

सो गई। अगली रात छुटकी ने समुद्र में लहरों की आवाज सुनी।

नोट—

01. यह पुस्तिका केवल आपके अभ्यास के लिए है।

02. आप जरूरी नहीं कि एक दिन में केवल एक ही अभ्यास करें आप एक दिन में दो भी कर सकते हैं।

03. इस मैटर का बार—बार अभ्यास करें ताकि आपका प्रथम चरण शुद्ध हो एवं आगे एक—एक शब्द अच्छी तरह भलीभांति समझ आ सकें।

04. घर पर इन मैटरों को कम से कम 10 बार करके आप अभ्यास करें ताकि आपको कक्षा में मैटर बोलने पर लिखने में सुविधा हो